Dr. Sachidanand Prasad.
Deptt. of Philosophy
R.R.S. College, Mokama.

B.A. (Hons) Part I (1)
Philosophy Paper I

Topic न्याय दर्शन का शब्द प्रमाण।

न्याय दर्शन में शब्द को भी एक प्रमाण के रूप में माना गया है। न्याय दर्शन में कहा गया है कि आप्तोपदेशः शब्दः अर्थात् विश्वासी पुरुष के वचनों को ही शब्द प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है। विश्वासी पुरुष के कथनों को आप्त वचन कहा जाता है। कोई व्यक्ति आप्त पुरुष तभी कहा जाता है जब उसके ज्ञान यथार्थ हो। आप्त पुरुष कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने ज्ञान को दूसरों की भलाई के लिए व्यवहार करता हो। इसलिए आप्त पुरुष के उपदेशों को ही शब्द कहा गया है। इसका वेद, पुराण = स्मृति, धर्मशास्त्र से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द ज्ञान कहा जाता है। शब्दों का विभाजन दो दृष्टिकोण से किया गया है। सबसे पहले शब्द को दो भागों में बाँटा गया है। ① दृष्टार्थ ② अदृष्टार्थ।

दृष्टार्थ शब्द का अर्थ ऐसे शब्द का ज्ञान जो समाज की प्रत्यक्ष की जा सकने वाली वस्तुओं से संबंधित हो। अदृष्टार्थ शब्द ऐसा शब्द जो प्रत्यक्ष नहीं की जा सकने वाली वस्तु से संबंधित हो। दूसरे दृष्टिकोण से शब्द का विभाजन दो भागों में किया गया है। ① वैदिक शब्द ② लौकिक शब्द।

Page No.
Date

(2)

वेद मे वर्णित सभी विषयों को सत्य माना जाता है इसलिए वेद के बातों को वैदिक शब्द कहा जाता है। साधारण मनुष्य के शब्द को लौकिक शब्द कहते है। लौकिक शब्द और वैदिक शब्द मे अन्तर यह है कि जहा लौकिक शब्द मानवकृत होते है जबकि वैदिक शब्द ईश्वरकृत होते है। वैदिक शब्द ईश्वरीय वचन होने के कारण बिलकुल सत्य होते है जबकि लौकिक शब्द सामान्य मनुष्य के वचन होने के कारण सत्य या असत्य कोई हो सकते है। वैशेषिक दर्शन मे शब्द को एक स्वतंत्र प्रमाण नही माना गया है बल्कि इसे अनुमान का प्रकार कहकर अनुमान के अन्तर्गत रखा गया है। सांख्य दर्शन केवल वैदिक शब्द को ही स्वतंत्र प्रमाण मानता है। चार्वाक दर्शन शब्द को प्रमाण नही मानता है। न्याय दर्शन शब्द को एक स्वतंत्र प्रमाण मानता है।

आलोचना :- न्याय दर्शन के शब्द प्रमाण की आलोचना करते हुए कहा है कि शब्द स्वतंत्र प्रमाण नही है क्योंकि शब्द भी किसी न किसी रूप मे अनुमान पर आधारित है। आलोचकों का कहना है कि शब्द प्रमाण आप्त पुरुष के वचन को कहते है और कौन व्यक्ति आप्त पुरुष है यह भी अनुमान पर आधारित है। अतः शब्द स्वतंत्र प्रमाण नही है।